किन्नर बच्चों के लिए संघर्षरत माँ- हिन्दी उपन्यासों के सन्दर्भ में

अमिता टेटे & डॉ. महेन्द्र कुमार वर्मा
अतिथि प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय
श्रीविजयपुरम, अंडमान निकोबार

माँ और संतान का संबंध संसार का सबसे पवित्र और निष्कलंक संबंध माना जाता है। यह वह नाता है जो किसी भी सामाजिक पहचान, लिंग, या परिस्थितियों की परवाह किए बिना अटूट प्रेम और अपनत्व का प्रतीक है। लेकिन जब संतान किन्नर (ट्रांसजेंडर) हो, तब यह संबंध और भी महत्वपूर्ण बन जाता है क्योंकि यह न केवल माँ की ममता की परीक्षा होती है, बल्कि समाज के रूढ़ विचारों के विरुद्ध स्नेह की एक सशक्त अभिव्यक्ति भी होती है। माँ और किन्नर संतान के प्रेम को समझना, दरअसल मानवीय संवेदनाओं की गहराई को समझना है। माँ की ममता कभी भी किसी शर्त या अपेक्षा पर आधारित नहीं होती। जब वह अपने बच्चे को जन्म देती है, तब वह नहीं देखती कि वह बच्चा किस लिंग का है या वह समाज की किस श्रेणी में फिट होता है। उसके लिए वह केवल उसका 'बच्चा' होता है – उसकी कोख से जन्मा, उसके दिल की धड़कन। जब माँ को पता चलता है कि उसका बच्चा एक किन्नर है, तो वह भले ही समाज के दृष्टिकोण से अनभिज्ञ न हो, परंतु उसके स्नेह में कोई कमी नहीं आती। बल्कि वह और अधिक संवेदनशील हो जाती है क्योंकि उसे पता होता है कि उसका बच्चा एक ऐसे जीवन की ओर बढ़ रहा है जहाँ उसे कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। किन्नर समुदाय को हमारे समाज में अब भी पूरी स्वीकृति नहीं मिली है। उन्हें तिरस्कार, उपेक्षा और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। कई बार माता-पिता स्वयं समाज के डर से अपने किन्नर बच्चे को अस्वीकार कर देते हैं। किंतु जहाँ माँ की ममता सच्ची होती है, वहाँ वह समाज की रूढ़ियों को तोड़कर अपने बच्चे के साथ खड़ी होती है। वह अपने किन्नर बच्चे को वह प्रेम, सुरक्षा और आत्मविश्वास देती है जिसकी उसे सबसे अधिक आवश्यकता होती है। किन्नर बच्चों का जीवन चुनौतियों से भरा होता है। पहचान की लड़ाई, शिक्षा और रोजगार में भेदभाव, और मानसिक तनाव जैसी समस्याओं से जूझते हुए उन्हें एक मजबूत सहारे की आवश्यकता होती है। माँ इस संदर्भ में एक सशक्त स्तंभ बनकर सामने आती है। इतना ही नहीं कभी-कभी माँ अपने किन्नर बच्चे को समाज और परिवार से बचाने के लिए रौद्र रूप भी धारण कर लेती हैI वह अपने बच्चे के लिए अपने पति से भी लड़ जाती है और जरुरत पड़ने पर रूढ़ियों से घिरे किन्नर समुदाय से भी संघर्ष करती है जो उसके किन्नर बच्चे को अपने समूह में सम्मिलित करने हेतु बच्चे को माँ से छीनने आ जाते हैंI वह न केवल अपने बच्चे को सामाजिक मानसिकता से लड़ने का साहस देती है, बल्कि उसे यह विश्वास भी दिलाती है कि वह जैसे है, वैसे ही पूर्ण और सम्मान के योग्य है।

यदि किसी परिवार में तृतीयलिंगी बच्चे का जन्म होता है तब ऐसी स्थिति में सर्वप्रथम माँ ही इस बात से परेशान और चिंतित होती है क्योंकि परिवार में किसी भी बच्चे के प्रति माँ का व्यवहार समान ही देखा गया है। बच्चा चाहे जैसा भी हो माँ का प्यार सदैव समान रूप से प्रत्येक बच्चे के लिए उतना ही होता है जितना कि एक सामान्य बच्चे के लिए होता है। फिर इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि बच्चे में कोई शारीरिक, मानसिक या लैंगिक कमी है। अपने लैंगिक विकलांग बच्चे अर्थात् तृतीयलिंगी बच्चे के प्रति भी माँ अपने सामान्य बच्चों की ही भांति प्यार करती है। एक माँ को अपने किसी भी बच्चे की दरी सहन नहीं होती। बच्चे के दूर जाने की कल्पना मात्र से ही वह शिहर उठती है। समाज के द्वारा बनाये गये नियमों के चलते ऐसा प्रचलन हो गया है कि यदि परिवार में किसी तृतीयलिंगी बच्चे का जन्म होता है तो उस बच्चे को घर में नहीं रखा जा सकता। ऐसे बच्चों को या तो पारिवारिक अन्य सदस्य स्वयं कहीं दूर कर देंगे या फिर तृतीयलिंगी समुदाय जानकारी होने पर इन बच्चों को इनके परिवार से दूर करने का पुरजोर प्रयास करेगा। ऐसे में एक माँ अपने बच्चे से जुदा होने या उसे खो देने की कल्पना मात्र से दु:खी हो जाती है। नीरजा माधव कृत 'यमदीप' उपन्यास में ऐसा ही कुछ देखने को मिलता है। जिसमें उपन्यास की मुख्य पात्र नंदरानी जिसका जन्म एक तृतीयलिंगी के रूप में हुआ और जब तृतीयलिंगी समुदाय के लोगों को इस बात की जानकारी हुई तब वे नंदरानी के घर उसे लेने पहुंच जाते हैं। किंतु उनके आते ही नंदरानी की माँ उनके प्रयोजन को जानकर, अपनी बच्ची को बचाने के लिए गुस्से से उनको भगाने का प्रयास करती है। उस समय एक माँ की ममता अपने रौद्र रूप में बाहर आ जाती है। नंदरानी की माँ द्वारा तृतीयलिंगी समुदाय के लोगों पर प्रकट किये क्रोध को नंदरानी इस प्रकार बयां करती है- ***"हे ज्यादा बढ़-चढ़ के न बोलो। चलो, भागो यहाँ से! मम्मी दहाड़ उठी थीं। ममता के लुटने के विचार मात्र से उनके डर ने अंदर से एक खूंखार आदमखोर सिंह का आकार ग्रहण कर लिया था।"*** [1]
अधिकांशतः यह पाया गया है कि तृतीयलिंगी समुदाय जैसे ही इस बात की जानकारी प्राप्त कर पाता है कि कहीं किसी घर में तृतीयलिंगी बच्चे का जन्म हुआ है, वे शीघ्र ही अपने समुदाय के लोगों के साथ उस बच्चे को लेने पहुंच जाते हैं। ऐसे में एक माँ को अपने तृतीयलिंगी बच्चे के प्रति असुरक्षा की भावना पैदा हो जाती है। किंतु यह तो बाहरी खतरा है जोकि एक माँ अपने तृतीयलिंगी बच्चे के प्रति महसूस करती है, लेकिन वह इस बात से भी भली-भांति वाकिफ होती है कि उसका पति उसके तृतीयलिंगी बच्चे को कभी स्वीकार नहीं करेगा। इसीलिए वह सदैव अपने उस बच्चे के बचाव का प्रयास करती है। किंतु वह एक पत्नी होने की वजह से कभी-कभी खुलकर अपने पति का विरोध नहीं कर पाती। इसी वजह से उसके बच्चे को पति द्वार दी गयी प्रताड़ना को सहन करना पड़ता है। किंतु पति के जाने के उपरांत वह अपने बच्चे की तकलीफों पर रोती-बिलखती है। उसके जख्मों को देख-देख स्वयं भी बच्चे के दु:ख में दु:खी हो जाती है। महेन्द्र भीष्म कृत 'मैं पायल' उपन्यास में ऐसा ही एक संदर्भ उल्लिखित है। जिसमें उपन्यास की मुख्य पात्र पायल जोकि तृतीयलिंगी है और इसी बात को उसके पिता सहन नहीं कर पाते। जिसकी वजह से पायल को पिता की बेतहाशा मार को सहन करना पड़ता है। किंतु पायल के पिता के जाने के उपरांत उसकी माँ पायल की चोटों पर मरहम लगाती है और उसके दु:ख में स्वयं भी दु:खी हो जाती है। जिसका उल्लेख उपन्यास में इस प्रकार किया गया है- ***"पिता जी के जाने के बाद मेरी दुखती चोटों को देखा जाता उन पर दवा का लेप किया जाता, अम्मा सिंकाई करते रोती जातीं, विलाप करने लगतीं। भगवान से मेरे लिए प्रार्थना करतीं..... मैं अम्मा को***

चुप कराती और खुद भी सुबकने लगती। देखा-देखी सभी बहिनें रोने लग जातीं। एक ऐसा शोक का वातावरण कुछ देर के लिए बन जाता जैसे कोई बहुत बड़ा अनिष्ट हो चुका है या जल्दी ही होने वाला है।" [2] एक माँ इस बात को भली-भाँति जानती होती है कि जो बच्चा उसकी कोख से तृतीयलिंगी के रूप में जन्मा है, उसमें उस बच्चे का कोई कुसूर नहीं है और शायद परिवार के अन्य सदस्य भी इस बात से वाकिफ होते हैं किंतु वे इसबात को मानना नहीं चाहते और उस तृतीयलिंगी बच्चे को प्रताड़ित करते हैं, उसे खरी-खोटी सुनाते हैं। यहाँ तक कि उसे घर-परिवार से बेदखल भी कर देते हैं। किंतु एक माँ ही है जो उस बच्चे की तकलीफ को समझती है और सदैव उसके बचाव के प्रयास में लगी रहती है। एक बच्चा जिसने तृतीयलिंगी के रूप में जन्म लिया है, इसमें उस बच्चे की क्या गलती है? इस बात को भी परिवार के सदस्यों को समझना चाहिए। किंतु ऐसा नहीं होता और माँ को अपने उस बच्चे के बचाव के लिए आगे आना पड़ता है। ऐसा ही एक संदर्भ नीरजा माधव कृत 'यमदीप' उपन्यास में उल्लिखित है। जिसमें उपन्यास की मुख्य तृतीयलिंगी पात्र नंदरानी के भाई को इस बात की चिंता सताती है कि घर में नंदरानी की वजह से अन्य लोगों के शादी-विवाह में बाधा उत्पन्न होगी। तब नंदरानी की माँ अपने बेटे को इस प्रकार समझाती है- ***"अरे चुप रे नंदन। नंदरानी सुन लेगी तो उसका मन कितना अधीर होगा। वह अभागिन क्या करे? स्वयं तो नहीं गढ़ा उसने अपना शरीर? मेरी कोख ही ऐसी ऐबही रही तो वो क्या करे?"*** [3] एक माँ के लिए उसकी संतान सर्वोपरि होती है। बात चाहे सामान्य बच्चे की हो या फिर तृतीयलिंगी या फिर उसमें किसी अन्य प्रकार की कमी हो, माँ बच्चों में भेद नहीं करती। वह सबको सामान्य रुप से प्रेम करती है। माँ अपनी संतान के लिए ममता के वशीभूत होती है और इसी वजह से वह अपने प्रत्येक बच्चे पर बेहिसाब प्रेम लुटाती है। किंतु तृतीयलिंगी बच्चे का नाम सुनते ही एक पिता के लिए बहुत मुश्किल हो जाता है कि वह उस बच्चे के साथ एक ही घर में रह सके। इसलिए उस बच्चे को अपने पिता की प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता है। हर संभव प्रयास किया जाता है कि उस बच्चे को स्वयं से, उसकी माँ से और समस्त परिवार से दूर कर दिया जाए। इसके लिए पिता उस बच्चे को मार-पीट से लेकर हर प्रकार की प्रताड़ना देते हैं। किंतु एक माँ को जब इस बात की जानकारी होती है कि पति द्वारा उसके बच्चे को प्रताड़ित किया जा रहा है तब वह अपनी ममता को नहीं रोक पाती और हर संभव प्रयास करती है कि वह अपने पति से उस बच्चे को बचा ले। कभी-कभी तो माँ को ऐसे बच्चे के लिए अपने पति का सामना भी करना पड़ता है और उस बच्चे की जगह स्वयं को ही उस मार-प्रताड़ना के लिए प्रस्तुत होना पड़ता है। ऐसा ही एक जीवंत उदाहरण भगवंत अनमोल के उपन्यास 'जिंदगी 50 50' में दिया गया है। जिसमें उपन्यास की पात्र हर्षा जो कि तृतीयलिंगी है, जिससे उसके पिता बहुत नाराज रहते हैं। वे उसे अक्सर अपने कोप का भाजन बनाते रहते हैं। किंतु एक दिन हर्षा की माँ को जब इस बात की जानकारी होती है कि उसके पति हर्षा को बेइंतहा पीटे जा रहे हैं, तब वह अपने पति और अपने बच्चे हर्षा के बीच आ जाती है। और अपनी ममता के वशीभूत होकर अपने बच्चे को बचाने के लिए अपने पति से संघर्ष करती हुई नजर आती है। जिसका उल्लेख उपन्यास में इस प्रकार है - ***"अगर मारना ही है तो पहले हमें मारो। हमारी लाश मा चढ़ के तुम हमरे बेटा को मार सकते हो। एक माँ का हृदय बोल उठा। वह जोर-जोर से रो रही थी और चिल्लाये जा रही थी, आखिर का गुनाह किया है इसने?"*** [4] जब एक स्त्री को तृतीयलिंगी बच्चा होता है तब वह इस बात से भली-भांति परिचित होती है कि उसके उस बच्चे का क्या अंजाम होगा। क्योंकि हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है और ऐसे समाज में परिवार में तृतीयलिंगी बच्चे का होना परिवार और पुरुषत्व पर दाग के समान समझा गया है। इसलिए एक माँ जब तृतीयलिंगी बच्चे को जन्म देती है तब उसका चिंतित होना स्वाभाविक हो जाता है। वह सदैव इस बात को लेकर चिंतित रहती है कि कैसे वह अपने पति से उस तृतीयलिंगी बच्चे को बचाए? जरूरत पड़ने पर माँ किसी भी व्यक्ति के सामने अपने तृतीयलिंगी बच्चे की असलियत को छिपाने के लिए प्रार्थना करती हुई दिखने लगती है। चाहे वह व्यक्ति उसके समकक्ष हो या उससे छोटा। महेन्द्र भीष्म कृत 'किन्नर कथा' उपन्यास में ऐसी ही एक माँ का उल्लेख किया गया है। जिसमें उपन्यास की पात्र आभा जिसने एक तृतीयलिंगी बच्ची को जन्म दिया है और उसे इस बात की जानकारी होते ही वह दाई निरंजना से इस राज को छिपाने की प्रार्थना करती है। ताकि परिवार की लाज के लिए उसे अपनी बच्ची की कुर्बानी न देनी पड़े। जिसका उल्लेख उपन्यास में इस प्रकार दिया गया है- ***"क्या? एक साथ सैकड़ों बिजलियां आभा की आंखों के सामने कौंध गईं। वह सन्न रह गई। कभी वह अपने हिजड़े बच्चे को देखती तो कभी सामने खड़ी निरंजना का मुंह ताकती, क्या करे, क्या न करे? आभा की कुछ समझ में नहीं आ रहा था। सोच में काफी देर डूबी रहने के बाद भरे गले वह निरंजना से बोली, काकी! अब हमाई सबकी लाज तुमाए हाथन है।"*** [5] माँ अपने बच्चे को बचाने का हर संभव प्रयास करती है। खासकर तब जब उसे अंजाम की जानकारी हो। वह अपने बच्चे को बचाने के लिए किसी भी हद तक गुजर सकती है और इसके बदले कुछ भी लुटा सकती है। बस उसे अपने बच्चे की फिकर होती है, इसके सामने उसे धन, संपत्ति का मोह नगण्य महसूस होता है। इसीलिए जब आभा को अपनी तृतीयलिंगी बच्ची की जानकारी हुई, तब उसे अपने पति के गुस्सैल स्वभाव के सामने अपनी बच्ची का भविष्य खतरे में नजर आया। तब वह निरंजना से अपनी बच्ची को बचाने के लिए इस राज को छिपाने के एवज में निरंजना को मुंह मांगी धन-संपत्ति देने को तैयार हो जाती है। जिसका उल्लेख महेन्द्र भीष्म कृत 'किन्नर कथा' उपन्यास में इस प्रकार है- ***"तुम तो दायजू को सुभाव जानती हो, कितेक गुस्सैल हैं वे, जा खबर तो वे बरदाश्त न कर पेहें, काकी तुमें जा बात सबसे छुपाने परे, हमाये तुमाये के अलावा कोऊ न जान पाए, दायजू भी....उने पतो परे तो वे ई नन्हीं-सी जान खां मरवा डारे, काकी तुमें हमाई सौगंध....तुमें जो रुपइय्या पईसा चाऊने हो, मैं मौ मांगी करों, पर तुमें ई बात हां एकदम गुप्त रखने।"*** [6] इसी उपन्यास में आभा सदैव इस बात से चिंतित रहती थी कि उसकी पुत्री सोना जोकि तृतीयलिंगी है, वह कभी भी उसके पति जगतराज के हाथों न पहुंच पाये। क्योंकि वह जानती थी कि अगर ऐसा हुआ तो उसका भेद खुल जाएगा और उसकी पुत्री सोना की जान खतरे में आ जाएगी। किंतु एक दिन किसी धार्मिक आयोजन के समय सोना की जुड़वा बहन जगतराज की गोद में पहुंच गई। जिसे देखकर आभा की चिंता और बढ़ गई। क्योंकि आभा इस बात से अंजान थी कि जो बच्ची उसके पति की गोद में है वह सोना नहीं बल्कि उसकी जुड़वा बहन रूपा थी। इसलिए आभा भगवान से अपनी ममता को लुटने से बचाने की प्रार्थना कर रही थी। जिसका उल्लेख उपन्यास में इस प्रकार से किया गया है- "***आभा को अपने सिर पर सैकड़ों पहाड़ टूटते-से लगे। पति देव की गोद से बच्ची कैसे ले? वह उपाय सोच ही रही थी कि जगतराज ने बच्ची की गीली चड्ढी फिर कलोट हटा दी। आभा ने अपने नेत्र मूंद लिए। निरंजना पहले ही हाथ जोड़े, बंद आंखों से ईश्वर का स्मरण कर रही थी।"***[7] इसी उपन्यास में आभा ममता के वशीभूत और अपनी बच्ची को खोने के डर से इस प्रकार घबरा गई थी कि उसे इस

बात का भान भी नहीं हुआ था कि जो बच्ची उसके पति की गोद में है वह सोना की जुड़वा बहन है, और उसकी तृतीयलिंगी बच्ची सोना तो उसकी ही गोद में है। किंतु आभा ने इसके विपरीत कल्पना की थी जिसके परिणाम स्वरूप वह डर गई थी और ईश्वर से अपनी बच्ची को बचाने की प्रार्थना कर रही थी। जैसे ही उसे इस बात की भनक लगी कि उसकी सोना तो उसकी ही गोद में खेल रही है, उसने उसे दुलारना शुरू कर दिया। इस संदर्भ का उल्लेख उपन्यास में इस प्रकार है-***"कुछ पल शांति के साथ व्यतीत हो गए, कहीं कोई हलचल नहीं। आभा धीरे-धीरे अपनी आंखें खोलती है, वह क्या देखती है कि पति देव बच्ची के कपड़े बदल उसे सही कर रहे थे, तो क्या? आभा की सांस में सांस आई। उसने अपनी गोद में लेटी दूसरी बच्ची को देखा। वह नन्हीं नटखट माँ की गोद में लेटी अपनी आंखें मटकाए उसे ही निहार रही थी। आभा ने ईश्वर को याद किया, गोद में लेटी बच्ची को प्यार से उठाकर चूम लिया। किन्नर बच्ची के गाल माँ की आंखों के आंसुओं से गीले हो गए।"*** [8] किसी माँ से जब उसका बच्चा बिछड़ जाता है तब ऐसी परिस्थिति में उस माँ का जीवन किसी नर्क से कम नहीं होता। भले ही वह बच्चा तृतीयलिंगी ही क्यों न हो। किंतु जो दर्द और पीड़ा एक माँ महसूस करती है उसे एक पिता शायद ही कभी समझ पाता हो। उपर्युक्त उपन्यास में आभा बहुत प्रयास करती है कि सोना जोकि तृतीयलिंगी है उसे अपने पति से दूर रखे किंतु वह अपने इस प्रयोजन में सफल नहीं हो पाती और जगतराज को जब सोना के तृतीयलिंगी होने की जानकारी मिलती है तब वह उसे उसकी माँ से जुदा कर देता है। जगतराज उस समय एक माँ की पीड़ा को महसूस नहीं कर पाता क्योंकि उसे सोना अपने वंश पर कलंक जैसी लग रही थी। किंतु एक माँ होने के नाते आभा को इन सब बातों से कोई सरोकार नहीं था। वहीं जगतराज को एक माँ की पीड़ा से कोई सरोकार नहीं था। उपन्यास में आभा के दःख और जगतराज के पत्थर दिल को इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है- ***"दूसरी ओर सोना के विछोह और उसके साथ हुए अंजाम से आभा का रो-रोकर बुरा हाल था। बच्चे के लिए हीड़ती माँ के हृदय में समाए दुःख-दर्द, पीर की लहर को कोई माँ ही महसूस कर सकती थी। पाषाण हृदय जगतराज जैसा पिता कदापि नहीं। संतान का विछोह सबसे बड़ा संताप है। जिसे पिता से कहीं अधिक माँ शिद्दत से महसूस करती है, भोगती है, कलपती है।"*** [9] एक माँ के लिए उसके बच्चे ही उसकी दुनिया और दुनिया की सारी खुशियों के समान होते हैं। वह अपने बच्चों के अंदर की प्रतिभा को जानती होती और उसी अनुरूप अपने बच्चे के सुनहरे भविष्य की कल्पना करती है। माँ अपने बच्चों के सपने साकार करने में हर संभव मदद करती है। किंतु कभी-कभी समाज के द्वारा बनाये गये नियमों के चलते विघ्न उत्पन्न हो जाता है और बच्चे के साथ-साथ माँ को भी उसके दुःख का सहयोगी बनना पड़ता है। चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा' में ऐसी ही एक विडंबना का उल्लेख किया गया है। जिसमें उपन्यास का मुख्य पात्र बिन्नी जोकि तृतीयलिंगी है और इसी के चलते उसे उसकी माँ से दूर कर तृतीयलिंगी समुदाय के हाथों सौंप दिया जाता है। बिन्नी गणित में होशियार था और उसकी माँ का यह सपना था कि उसके पुत्र का भविष्य एक गणितज्ञ के रूप में है और वह अपना सपना टूटने नहीं देती। इस बात का उल्लेख बिन्नी की माँ ने उपन्यास में इस प्रकार किया है- ***"मैंने भी उन्हें चिट्ठी लिखी थी। मेरे दीकरे की प्रतिभा आपकी विरासत है। देश-विदेश में व्यस्त रहती हैं आप अक्सर लेकिन किसी रोज ऐसा होगा। आप स्वयं आएंगी मेरे दीकरे से मिलने। गर्व करेंगी। मुझे नहीं मालूम मेरे बच्चे का सपना क्या है? लेकिन मैं जानती हूँ उसे लेकर मेरा सपना क्या है? वह दुनिया का सबसे बड़ा गणितज्ञ बनेगा। अपना सपना कभी टूटने नहीं दूंगी शकुंतला जी।"*** [10]

माँ और किन्नर बच्चे के प्रेम से हमें यह सीखने को मिलता है कि प्रेम की कोई सीमा नहीं होती। यह न रिश्तों की परंपरागत परिभाषाओं में बंधा है, न ही सामाजिक पहचान की शर्तों में। यह प्रेम हमें इंसानियत के उस शिखर पर ले जाता है जहाँ केवल करुणा, स्नेह और स्वीकृति का स्थान होता है। माँ के माध्यम से यह संदेश जाता है कि किन्नर बच्चे भी उतने ही प्रेम, अधिकार और गरिमा के पात्र हैं जितने कोई और। माँ और किन्नर बच्चे का संबंध केवल एक व्यक्तिगत रिश्ता नहीं है, बल्कि यह समाज को एक व्यापक संदेश देता है – कि हर जीवन समान रूप से मूल्यवान है और हर रिश्ते को समान रूप से सम्मान मिलना चाहिए। यदि हर माँ अपने किन्नर बच्चे को उसी ममता से स्वीकारे जैसी वह अन्य बच्चों के लिए रखती है, तो न केवल उस बच्चे का जीवन उज्ज्वल हो सकता है, बल्कि समाज में समावेश, करुणा और प्रेम की एक नई परंपरा की शुरुआत हो सकती है।

संदर्भ सूची :-

1) यमदीप, पृ. – 249
2) मैं पायल, पृ. – 34
3) यमदीप, पृ. – 248
4) जिन्दगी 50 50, पृ. – 42
5) किन्नर कथा, पृ. – 16
6) वही, पृ. – 16
7) वही, पृ. – 19
8) वही, पृ. – 16
9) वही, पृ. – 43
10) पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा, पृ. – 72